१०८ वाक्य स्तुति-१

मूकमाटी रचयिता आचार्य
श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज की

गद्य स्तुति/गद्य पूजन/शताष्टक/शब्दांजलि

स्तुतिकार – मुनि श्री १०८ भावसागर जी महाराज

अध्यात्म शिरोमणि, आत्मान्वेषी, आत्मशिल्पी, अध्यात्म सरोवर के राजहंस, आध्यात्मिक संत, आध्यात्मिक गगन के ध्रुव नक्षत्र, अध्यात्म प्रिय, अमूल्य रत्नत्रय के आधार, अंगपूर्व समुद्र के पारगामी, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, वात्सल्य मूर्ति, विद्यावारिधि, वीतरागता के संवाहक, वात्सल्य रत्नाकर, विश्ववंद्य, वाणी के अनुरूपचर्या के पालक, वीतरागी, व्रतीशील रत्नाकर, वीतरागता के अनुपम सपूत, संत शिरोमणि, समाधि सम्राट, साहित्यिक साधना के धनी, साहित्य मनीषी, सन्मार्ग दिवाकर, संस्कृति के रक्षक, सदलगा के संत, संस्कारों के निर्माता, समर्ग मानवता के उन्नायक, सत्य स्वरूप ज्ञान के अन्वेषक, श्रमण संस्कृति उन्नायक, श्रद्धापुंज, श्रमण संस्कृति के प्रबल संरक्षक, श्रेष्ठ आचार्य, श्रेष्ठ संत, समूची धरा के विकासशीय पर्याय, साधना के शिखर पुरुष, शरद पूर्णिमा के चाँद, ईयापथरू उत्तम नेत्र के धारक, जीवदया के मसीहा, कविहृदय, महाकवि, ज्ञान के सागर, धर्मसम्राट, प्रज्ञाश्रमण, उद्भट् मनीषी, तीर्थोद्धारक, पतितों के पालक, दिगंबर सरोवर के राजहंस, धर्मध्यान के ध्याता, रत्नत्रय के प्रतीक, महायोगी, परम तपस्वी, जीते जागते भगवंत, पंचमहाकालेश्वर, रत्नत्रय के संसाधक, करूणा के भंडार, धर्मप्राण, दिव्य देशना के प्रस्तोता, युग प्रर्वतक, चारित्र शिरोमणि, निष्पक्षी, परम हितकारी, धर्म प्रभावना में अग्रणी, क्रांत दृष्टा, युगप्रमुख, वर्तमान के महावीर, तपतेज दिवाकर, गौधन उद्धारक, परमोपकारी, धर्मध्यान में अग्रसर, चेतन मनीषी, तपोपूत, तपोसाधक, जिनशासन के मेघदूत, मूकमाटी के सृजेता,इ ंद्रिया वजेता,च ेतनाचेतनम ूर्तिके ि शल्पी,ि नर्विकल्पी,ि त्रलोकप ूज्य,ि नर्विकारी, युगनिर्माता, पथ प्रदर्शक, प्राणी मात्र के श्रेयक, महामुनि, चारित्र चूड़ामणि, मृत्युविजय के अभिलाषी, कामविजेता, वाह्याभ्यन्तर परिग्रह रहित, निस्पृही संत, धर्म के उपदेशक, जितेन्द्रिय, परमकारुणिक, दिशारुप वस्त्र के धारक, अनेक ऋद्धियों से विभूषित, राष्ट्रसंत, शांति और समता के प्रतीक, प्रातः स्मरणीय, संध्या वंदनीय, मानव मूल्यों की उत्क्रांति के महाचेता, संयम रथ के सारथी, धराधाम के उद्धारक, त्रिकालपूज्य, सिद्धांत वारिधि, साधना के शिखर पुरुष, छोटे बाबा, बाल ब्रह्मचारी

१०८ वाक्य स्तुति

मूकमाटी रचयिता आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज की गद्य स्तुति/गद्य पूजन/शताष्टक

प्रसंग
53 वाँ मुनि दीक्षा दिवस
25 जून 2020

शब्द संयोजना
मुनि श्री भावसागर जी महाराज

अति ग्रीष्म की आग्नेय पवन के समान तपोसाधक, बालक वत निर्विकारिता के धारक, तपाग्नि में निखरे स्वर्णवत शरीरधारक, स्वर्ण के समान शुद्ध ब्रह्मचर्य व्रत के धारी, पूर्ण महाव्रत रूपी कवच के धारक, संस्कार एवं विचार सुधार क्रांति के धारक, वचन और तप में अद्वितीय, आंकिचन्य की पराकाष्ठा के धारक, मधुरभाषी, मुखमण्डल पर स्थित निश्चल मुस्कान के धारक, वात्सल्य में नवनीत से भी कोमल प्रकृति के धारक, शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिभा स्थली को संस्कार शाला बनाने उत्कृष्ट गुरु, कुण्डलपुर, रामटेक, बीना बारह, अमरकंटक, भाग्योदय, चंद्रगिरी आदि क्षेत्रों के आशीर्वाद प्रदाता, जिनके वचन रूपी तीर्थ विद्वानों के वचन मल को धोने वाले हैं, जिनकी शास्त्र वचन पद्धति प्राणियों के चित को निर्भय करती है, कुशल प्रवचनकार, अपरिग्रह के अस्त्र से सुसज्जित, चातक पक्षी की तरह प्रभु दर्शन के प्यासे, महायश कीर्ति के धारक, सर्वजनों के प्रिय, सर्वांग सुन्दर, आत्म हिंतकर, परम यशस्वी, आत्म शिल्पी, योगेश्वर, युग प्रर्वतक महान भावश्रमण, अंतरंग तप की प्रयोगशाला, सिंह के समान पराक्रमी, गज के समान स्वाभिमानी, मृग के समान सरल, चैतन्य महामनीषी, गाय के समान निरीह गोचरी वृत्ति करने वाले, पवन के समान निःसंग, सूर्य के समान तेजस्वी, सागर के समान गंभीर, मेरू के समान अकंप, चंद्रमा के समान शांतिदायक, मणि के समान प्रभा पुंजयक्त, क्षिति के समान सर्व बाधाओं को सहने वाले, आकाश के समान निरालम्बी, महान साधक महान तपस्वी, ज्ञान मूर्ति, चरित्र विभूषण, पंचाचार युक्त, दार्शनिक विचारक, धर्म प्रभाकर, सद्मनीषी, आदर्श चरित्र नायक, कुंद-कुंद परंपरा उन्नायक, जिनवाणी के सही उद्बोधक, शास्त्र विद्वानों में अग्रसर, युग प्रर्वतक युगपुरुष तार्किक शिरोमणी, सम्यकत्वरूपी आभूषण धारक, नक्षत्रों के समुदाय में चंद्रमा, दुर्धर चरित्र धारी, वीर भिक्षा वृत्तिधारी, पर्वत के समान मन स्थिरधारी, स्फटिक के समान निर्मल, जौहरी के समान परीक्षक, सहनशील, धैर्यशाली, क्षमावान, कर्तव्य परायणता धारक, निर्विकारिता के परिचायक, ज्ञान पिपासु, दीर्घ तपस्वी, भव के नाशक, निस्पृही संत, वात्सल्य के कोष, कठोर चर्या धारक, सुदुपदेशी, महातपस्वी, सतत् शांत मुद्रा धारक, शांत स्वभावी, साधना में कठोर, तेजस्वी पुरुष, स्वालम्बी मानवतावादी, प्रतिभा मूर्ति, सरस्वती पुत्र, शोध खोज पटु, प्रख्यात उद्भट विद्वान, सर्वश्रेष्ठ आचार्य, सौम्य व गंभीर मुद्रा के धारक, अनित्य भावना के चिंतन के धारक, निन्द्रा आलस्य प्रमाद से दूर, सर्वश्रेष्ठ चारित्र और शील के धारक, दीन दुखियों के संरक्षक, शांति और वात्सल्य संदेश के उद्बोधक, अंर्तमना, जितेन्द्रिय, जिनसंहिता के उत्कृष्ट पालक, गौ उद्धारक, चिकित्सा के क्षेत्र में विष्णुकुमार मुनि सम, शब्द शास्त्र समुद्र, योगीश्वर यतीवर, चेतनानाथ, निष्ठावान, जिनाधीश, लोक मस्तक मणि, परमागम प्रवीण, अध्यात्मसिरमौर, शत्रुता में मौन धारक, जिनकी सखी क्षमा है पुत्र शील है, निर्मल दया भ्राता सम्यक्त्व आपका पिता सुदुरवर्ती मोक्ष है, आपको अनंतवार भाव सहित नमस्कार हो।

सौजन्य से - नरेश जैन (गोपाल एग्रो प्रोडक्ट) राजनांदगांव (छ.ग.) मो.: 9425238271 (संदर्भ :- विभिन्न ग्रंथों, पुस्तकों से)
आकृति बीना 9981331700

१०८ वाक्य स्तुति-३

मूकमाटी रचयिता आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज की

गद्य स्तुति/गद्य पूजन/शताष्टक/शब्दांजलि

स्तुतिकार – मुनि श्री १०८ भावसागर जी महाराज

तपोनिष्ट साधक, अलौकिक अनुभूति कारक, समाज के निःस्वार्थ मार्गदर्शक, धर्मदर्शन विज्ञ साहित्यकार, सिद्धांत वेत्ता, आध्यात्मिक प्रवचनकार, भारतीय संस्कृति के मर्मज्ञ, राष्ट्रीय चिंतक, जैन मुनि संहिता के तपस्वी साधक, युगवेत्ता, उदात्त चिंतक, अनासक्त योगि, आत्मानुशासक, सकारात्मक विचार विधायक, कालजयी साधक, श्रमणाकाश के ध्रुव्रतारे, उदीयमान नक्षत्र, शब्दों के शिल्पकार, तपस्या की कसौटी, आदर्शयोगि, ध्यानध्याता ध्येय के पर्याय, कुशल काव्य शिल्पी, प्रवचन प्रभाकर, अनुपम मेधावी, नव नवोन्मेषी प्रतिमा के धनी, सिद्धांतागम के पारगामी, वाग्मी ज्ञानसागर के विद्या भण्डार, प्रभु महावीर के प्रतिबिम्ब, बालकवत् निर्विकारी, अनियत बिहारी, अयाचक वृत्ति के धनी, अहिर्निश सजग, करुण ह्रदयी, स्वावलम्बी, निर्मोही, अथाह त्याग के साधक, अनूठे त्याग के दिग्दर्शक, एक असाधारण तेजस्वी व्यक्तित्व, सहिष्णुता की पराकाष्ठा धारक, भारतीय संस्कृति के रक्षक, राष्ट्रीय विचार संप्रेरक, मानव जाति के कल्याण प्रदाता, सादगी त्याग व भक्ति मार्ग के सन्मार्ग प्रदर्शक, सदुपदेशी, महातपस्वी, मनस्वी, सतत् शांत मुद्राधारी, विषयाशा विरत्त, विद्यारसिक, प्रवचन पटु, शांत स्वभावी, निस्पृही संत, पर दुःख कातर, विनय धैर्य और सहिष्णुता की मूर्ति, भद्र परिणामी, साधना में कठोर, वात्सल्य के मेरु, सरल प्रकृतिधारी, स्वालम्बी, स्वाभिमानी, मानवतावादी, संवदेनशील, अगाधज्ञानी, कुशलशिल्पी, पारखी, चमत्कारी व्यक्तित्व के धनी, अहिंसा के पुजारी, युग प्रवर्तक, श्रमण संस्कृति के उन्नायक, धर्म प्रिय समाज के मार्गदर्शक, अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व के धनी, शाश्वत पाथेय प्रदाता, इस युग की महान विभूति, अहेतुकी कृपा प्रदाता, कल्याण पथ प्रदर्शक, ईश्वरीय गुण सम्पन्न, मानवता के प्रतिनिधि, अकल्पनीय त्याग की प्रतिमूर्ति, धर्मदर्शन के सारांश, त्याग तपस्या के जीवन्त निदर्शन, मानव जाति के प्रेरणा स्त्रोत, त्याग तपस्या के जीते जागते स्वरूप, आत्म साधकों के मार्गदर्शक, सुख देने वाले संत, निर्मल व्यक्तित्व के धारक, पवित्र व्यक्तित्व के धनी, ज्ञान-दया एवं करूणा की त्रिवेणी, मानव समाज के प्रेरणा स्तम्भ, सुषुप्त शक्तियों के जागरणकर्त्ता, अहिंसा धर्म के प्रबल उद्घोषक, अलौकिक शक्ति प्रदाता, दुःख दर्द हरता, असाधारण क्रांति के उद्बोधक, अद्भुत ज्ञान वृक्ष प्रदाता, चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी, विश्व की महान विभूति, दिव्य पुरुष, अवर्णनीय व्यक्तित्व के धनी, मनहारी मूरतधारी, नैतिकता और मूल्यों के पुनःस्थापक, दान की महत्ता के प्रतिपादक, प्रेम की प्रतिमूर्ति, अद्वितीय पुरुष, अहिंसा की अलख जगाने वाले, तपश्चर्या की प्रतिमूर्ति, श्रेष्ठ आचरण धारक, धर्म संस्कृति और साहित्य के रक्षक, जनमानस के उद्धारक, मानव धर्म के उद्घोषक, इच्छा विजेता, ईश्वरीय गुणों की जीती जागती मूर्ति आपके श्री चरणों में अनंत बार नमस्कार हो।

सौजन्य – नरेश जैन (गोपाल एग्रो प्रोडक्ट) राजनांदगांव (छ.ग.) मो.: 9425238271

(संदर्भ :- विभिन्न ग्रंथों, पुस्तकों से)

आकृति बीना 9981331700

१०८ वाक्य स्तुति-४

मूकमाटी रचयिता आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज की

गद्य स्तुति/गद्य पूजन/शताष्टक/शब्दांजलि

स्तुतिकार -

मुनि श्री १०८ भावसागर जी महाराज

शाश्वत् के प्रतिनिधि, अनन्तश्री विभूषित शारदा के सम्पूर्ण ज्ञान के भण्डार, अहिंसा-शांति और मानवता के पुजारी, इस युग के महामानव व महासंत, अखण्ड ज्ञान के भण्डार, जल में कमल की भांति निर्लिप्त मूर्ति, महान विभूति, सबके जीवन के प्रेरणा स्त्रोत, अपार आनंद प्रदाता, अलौकिक आत्मा, अलौकिक सुख प्रदाता, राष्ट्र और संस्कृति की धरोहर, कलयुग के विरले संत, परमात्म स्वरूप के धारक, दिव्य आत्माधारक, चतुर्थकालीन श्रमणों सी निर्दोष चर्या के पालक, आदर्शों के प्रतिमान, ज्ञान भक्ति वैराग्य के पर्याय, धर्मचर्या और तत्त्वबिन्दु युग पुरुष, शाकाहार और सामाजिक सौहार्द्र के प्रसारक, असीम शांति प्रदाता, सम्पूर्ण भारतीय समाज की विशिष्ट आध्यात्मिक विभूति, दिव्य आभा के धनी, युग पथ प्रदर्शक, हिमालय सम विशाल चारित्र के धनी, श्रमण संस्कृति रक्षाप्रहरी, जैन जगत के ज्योतिर्मान आचार्य, मुख मण्डल से आंतरिक आनंद के परिचायक, तेजस व अलौकिक प्रकाश पुंज, विशेष सत्ता के धनी, ज्ञान की अविरल गंगा प्रवाहित करने वाले भागीरथ, असीम त्यागी व संयमी महानपुरुष, ज्ञान के अथाह भण्डार के स्वामी, धर्म के अथाह सागर, एक अद्‌भुत ज्योतिपुंज, वैराग्य की प्रति मूर्ति रूप महानसंत, जीवंत तीर्थ, जिनशासन के शब्दकोश, जन जन के कल्याणकर्त्ता, निस्पृहता और वीतरागता की जीवन्त मूर्ति, धर्मध्वजा के धारक, महान तपस्वी संत, कल्याणकारी देवदूत, महापुरुष अग्रणी, समुज्जवल नक्षत्र, भविष्य के मार्ग के प्रकाश स्तम्भ, दिव्य प्रकाश पुन्ज, तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी अर्न्तयामी पुरुष, अभिनव कांति के अग्रदूत, अहिंसा मार्ग के उद्‌घोषक, यथानाम तथा गुण, सुखी जीवन प्रदाता, वीतरागता की जीवंत मूर्ति, इक्कीसवीं सदी के परम संत, विद्या-विनय के अद्‌भुत संगम, गुणग्राही ऋषिराज, परोपकारी और जगत् कल्याणकारी महानपुरुष, समग्रता के साकार स्वरूप, असम्भव को सम्भव कर देने वाले संत, निष्कलंक वैचारिक व्यवहार के धनी, संजीवनी प्रदाता, आचरण की सभ्यता के संदेश वाहक, संसार की क्षण भंगुरता के प्रबोधक, कल्पनातीत सौभाग्य के धनी, निराले व्यक्तित्व के धनी, तपस्वी राज, अलौकिक व दिव्य तेज के धारक, आदर्शमय जीवन यात्री, भगवत् भक्ति में तत्पर असाधारण महापुरुष, महान् कर्मयोगी व धर्माचारी, महान तपस्वी, मनस्वी चिन्तक व निष्ठावान विचारक, निर्ग्रन्थ श्रमणाचार के साकार रूप, सिद्ध लोक के सत्पथगामी, विश्व मंगल कामना के उद्‌बोधक, रत्नत्रय के प्रकाश पुन्ज, साहित्य जगत के ज्योतिर्मय नक्षत्र , उत्कृष्टचर्या के धारक, आचार्य कुंदकुंद के प्रतिबिम्ब (प्रतिरूप), आत्मज्ञानी, आत्मध्यानी, चलते-फिरते तीर्थसम, जिनके जीवन की हर चर्या मूलाचार है, वात्सल्य की मूर्ति, जिनशासन की जगमग ज्योति, मुखमण्डल के अद्‌भुत तेज के धारक, बोलता हुआ समयसार-चलता हुआ मूलाचार, सारे प्रश्नों के जवाब, श्रमण परम्परा की साक्षात् मूर्ति, लोकप्रिय एवं विद्वान संत, मोक्षमार्ग पर आरुढ़ दिगम्बर रूपी छवि के धारक, आत्म कल्याण के लिए प्रकाश प्रदाता, अलौकिक वाणी से कर्मो को काटने वाले, निर्ग्रन्थ-निर्विवाद छवि धारक, युगदर्शक, कलयुग में स्वयं सम्पूर्ण समयसार, साहित्य मनीषी, प्रयोगधर्मी कवि, मुनिपथ के पथिक, प्रज्ञा चक्षु, तपस्यारत, दार्शनिक संत, रससिद्ध, साहित्य शिल्पी, काव्यकार, अक्षुण्ण विभूति, आधुनिक राष्ट्रीय संत, मर्मीकवि, सफल अनुवादक, चिन्तक कवि, तत्व विद् युगपुरुष, ऊर्ध्वमुखी यात्री, तप से तपी वाणी के धारक, अमर शिल्पी आपके श्री चरणों में अनंत बार नमन!

सौजन्य - नरेश जैन (गोपाल एग्रो प्रोडक्ट) राजनांदगांव (छ.ग.) मो.: 9425238271

(संदर्भ :- विभिन्न ग्रंथों, पुस्तकों से)

आकृति बीना 9981331700

१०८ वाक्य स्तुति-५

मूकमाटी रचयिता आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज की

गद्य स्तुति/गद्य पूजन/शताष्टक/शब्दांजलि

स्तुतिकार -
मुनि श्री १०८ भावसागर जी महाराज

अतुलनीय साधक, अनुपमेय साधक, मनोज्ञ छविधारी, प्रभावक व्यक्तित्व के धनी, लक्ष्यनिष्ठ साधक, शक्ति शःतपस्वी स्वान्मुखी दृष्टिधारी, यथोचित व्यवहारी, ह्रदयसम्राट, धर्मसम्राट, शिष्य सम्राट, दैदीप्यमान महापुरुष, अभ्यंतर तप साधक, पंचाचार पालक, अभ्यंतर तप धुरंधरी, बाह्य तपोधर, उत्तम दस धर्मधारी, जिनमार्ग पोषक, प्रभावक आचार्य, पवित्राधारी, परमसाहसी, श्रमण धर्मवाही, श्रमण परंपरा संप्रवाहक, धर्म प्रभावनाशील, क्षिति शशिसागर सदृश, अर्हंतवत् पूज्य, कर्म अरि विध्वंसकधारी, आत्म चिकित्सक, आत्म साम्राज्य विस्तारक, इन्द्रिय दमनकारी, मनोजयी आत्मानंद दायक, एकांतप्रिय बादशाह, आत्मरमण के उपासक, दोष परिमार्जक, सर्वोत्तम दर्शन विनयीधारक, सप्तभय मुक्तिधारी, समीचीन मार्ग उपासक, स्व पर उन्नतिकारक, पर दोष आच्छादक, स्वदोष उद्घाटक, संयम दृढ़ धारक, अकृत्रिम स्नेह धारक, आत्म साधना के हिमालय, गुरुओं के परम गुरु, कलयुग के समंतभद्र, शुद्ध स्वर्णवत् तपस्वी, जिन माहात्म्य प्रभावक आचार्य, जिनप्रभावना उत्साही, चर्या प्रभावक आचार्य, चर्या शिरोमणि, व्यक्तित्व प्रभावक, मोक्ष संसाधक, आकर्षक बाह्य व्यक्तित्व के धनी, अंतर्राष्ट्रीय विभूति, कीर्तिप्रभावी, शताब्दी पुरुष, केवलज्ञान साधक, चारित्र शिरोमणि, महाकीर्ति के धारक, सच्चे उपचार विनयी, तीर्थंकर प्रकृति की ओर अग्रसर, मानसिक, वाचनिक, कायिक वैयावृत्ति के धारी, अनुप्रेक्षामयी स्वभावी, आम्नाय स्वाध्यायी, अविस्मरणीय स्मरण शक्ति के धनी, केवलज्ञान भ्रमर, अशन-आसन साधक, अकंपध्यानी, शुद्धात्म परिचायक, मुक्ति बीजधारी, ज्ञानसिद्धि धारक, जिनवाणी आराधक, गुण कीर्तनधारी, निष्कंप साधक, आत्मरक्षक, अटल काय योगी, गुणमणियों की खानि, वचन गुप्ति संरक्षक, संयम परीक्षक, त्याग धर्म पोषक, शील समुद्र वर्धक, पंचाचार पालक, शुद्धात्म परिचायक, मुक्ति के दीपदान, विशुद्धि धारक, महान कल्पद्रुम, चैतन्य पुंज, गुरुकुल प्रदाता, जिनमहिमा मंडित धारक, श्रमणाकाल के नक्षत्र, सुसंस्कार प्रदाता, विश्व के प्रसिद्ध साधक, मुक्ति के सोपान के धारक, अद्भुत प्रेरक, यथार्थ अतिथि, आगमानुसारी बिहारी, अघोषित दीक्षा प्रदानकर्त्ता, पुण्य वर्चस्वी, अपरिग्रही खजांची, सहनशील, निस्पृहीसंत, जितेन्द्रिय, मृदुभाषी, अनुशासन के पक्षधर, ज्ञानामृत के धारी, पंचपरमेष्ठी आराधक, मुक्ति रथ के सारथी, आपके श्री चरणों में मन-वचन-काय पूर्वक अनंत बार नमस्कार हो!

(संदर्भ :- विभिन्न ग्रंथों, पुस्तकों से)

सौजन्य - नरेश जैन (गोपाल एग्रो प्रोडक्ट) राजनांदगांव (छ.ग.) मो.: 9425238271

आकृति बीना 9981331700

१०८ वाक्य स्तुति–६

मूकमाटी रचयिता आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज की

गद्य स्तुति/गद्य पूजन/शताष्टक/शब्दांजलि

स्तुतिकार -

मुनि श्री १०८ भावसागर जी महाराज

संयम के भण्डार, चारित्र के प्रखर सूर्य, सर्वश्रेष्ठ समाधान कर्त्ता, सर्वप्रिय, सर्वयशधारक, सर्वव्यापी, महाअतिथि, उपगूहन अंग के सर्वश्रेष्ठ पालक, ज्ञानार्णव, मर्यादा पुरुष, यशस्वी, विशेष कायोत्सर्ग धारक, निरालम्बी, सर्वांग सुन्दर, आध्यात्मिक चिन्तक, सिद्धहस्त, सफल साधक, मेधावी कवि, कंठ में सरस्वती के धारक, धर्मोपदेश कर्त्ता, आचरण के धनी, विषयों के प्रति निरपेक्ष रहने वाले, सत्कर्म करने वाले, किसी से बैर प्रदर्शित न करने वाले, निष्काम पुरुष, जैनधर्म और दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान, कवियों में कविसंत, तलस्पर्शी विद्वान, प्रपंचो से विरत, आत्म दृष्टा, निराकांक्ष, निस्पृह श्रमण, क्रान्ति चेता के युग पुरुष, तत्त्वज्ञ मनीषी, शब्दों के शंख बजाने वाले, रससिद्ध काव्यकार, अनुभूति प्रवण कवि, विचक्षण शब्दकार, काव्य शास्त्री, श्रमण संस्कृति के अध्येता, जैन दर्शन के अद्‌भुत चिन्तक, वीतराग पथ के पथिक, महाप्रज्ञ, महाकारुणिक, दार्शनिक संत, मोक्षमार्ग उन्नायक, साहित्य के विशेष पारदर्शी, विज्ञसमालोचक, शब्द निष्णांत, अर्न्तमुखी कवि, सच्चे साहित्यकार, मन्मथ भंजक, सदाकाल वन्दित, राष्ट्रलेखक, बहुभाषा विद्, अशरणों की शरण, विश्व हितंकर, करुणा निधान, प्राणीमित्र, संस्कृति स्नेही, साम्यदृष्टि, धर्म शासक, आकिंचन्य की पराकाष्टा के धारक, गोचरी वृत्ति के उत्कृष्ट पालक, अचल मनस्वी, अटल इन्द्रिय धारक, विशिष्ट अतिथि, अतुलनीय प्रतिभा के धनी, अद्‌भुत चर्या के धारक, अद्वितीय मनोबल के धारक, अनोखे व्यक्तित्व के धनी, अमूल्य ज्ञान के धारक, श्रमणों के अध्यक्ष, अनंत ज्ञान के भण्डार, अनवरत बिहारी, अनित्य भावना के उपासक, अनुत्तर महायोगी, अनुपम साधक, चार अनुयोगों के विशिष्ट स्वाध्यायी, प्रभु अनुरागी, विशिष्ट अनुशासन पालक, धार्मिक अनुष्ठान के मार्गदर्शक, अनेकांत के उपदेशक, आनंद प्रदाता, मान अपमान में समान रहने वाले, अपूर्व क्षयोपशम के धारी, अभिवन्दनीय व्यक्तित्त्व, अभीष्ट समता के धारक, अमूल्य रत्नत्रय के विशेष साधक, विशेष अनुभवी, स्वदेशी के पक्षधर, हिन्दी भाषा के प्रचार प्रेरणा स्रोत्र, अपराजेय साधक, ब्रह्मचर्य व्रत के सर्वश्रेष्ठ पालक, अभीक्षण ज्ञानी, अष्टम वसुधा की ओर अग्रसर, अहिंसा व्रत के सजग प्रहरी, आगम के सर्वश्रेष्ठ उपासक, मोक्ष पाने को आतुर, आत्महित में अग्रसर, आदर्श श्रमण परंपरा के उन्नायक, जिनशासन के अग्रदूत, उच्च आचरण के सर्वश्रेष्ठ पालक, उत्तम चारित्र के धनी, जिनशासन के उद्‌घोषक, सर्वश्रेष्ठ जिनवाणी उद्‌बोधक, उपगूहन अंग के उत्कृष्ट पालक, सर्वश्रेष्ठ साधक, बाल ब्रह्मचारी संघ नायक, अध्यात्म सरोवर के राजहंस, प्रभुभक्ति में सदैव लीन रहने वाले, आपके चरणों में अनंत बार नमन हो।

सौजन्य - नरेश जैन (गोपाल एग्रो प्रोडक्ट) राजनांदगांव (छ.ग.) मो.: 9425238271

(संदर्भ :- विभिन्न ग्रंथों, पुस्तकों से)

आकृति बीना 9981331700